

ऋषि विश्वामित्र विद्या फाउंडेशन

ऋग्वेद मन्त्र विश्लेषण

आध्यात्मिक एवं याज्ञिक परिप्रेक्ष्य
(ऋग्वेद १.१.७)

प्रस्तुतकर्ता: आचार्य कपिल

सम्पर्क सूत्र: 8756390767

वेद के मन्त्रों के अर्थ बहुआयामी होते हैं। जहाँ आचार्य सायण इनका अर्थ यज्ञ-कर्मकाण्ड के अनुसार करते हैं, वहीं महर्षि दयानन्द सरस्वती इनका आध्यात्मिक और यौगिक/वैज्ञानिक अर्थ प्रस्तुत करते हैं। आइए ऋग्वेद के प्रथम मण्डल, प्रथम सूक्त के सातवें मन्त्र का गहराई से अध्ययन करें।

मूल मन्त्र

उपं त्वाग्ने दिवेदिवे दोषावस्तर्धिया वृयं ।
नमो भरंत एमंसि ॥७॥

पदपाठः

उपं । त्वा । अग्ने । दिवेऽदिवे । दोषाऽवस्तः । धिया । वृयम् । नमः । भरन्तः । आ । इमंसि ॥७॥

शब्दार्थ (Word Meaning)

उप	= समीप (निकट)।
त्वा	= आपको / आपके।
अग्ने	= हे अग्निदेव! / हे सर्वोपास्य परमेश्वर!
दिवेदिवे	= प्रतिदिन / विज्ञान के प्रकाश के लिए।
दोषावस्तः	= रात और दिन (अहर्निश)।
धिया	= बुद्धि से / प्रज्ञा और उत्तम कर्मों से।

वयम्	= हम (उपासक या अनुष्ठाता)।
नमः	= नमस्कार / नम्रता को।
भरन्तः	= धारण करते हुए / सम्पादन करते हुए।
आ इमसि	= (हम) भली-भाँति आते हैं / प्राप्त करते हैं।

कर्मकाण्डीय विनियोग (Ritualistic Uses) एवं प्रमाण

आचार्य सायण के अनुसार इस मन्त्र का प्रयोग यज्ञ के विशिष्ट कर्मकाण्ड में किया जाता है।

- **विनियोग:** 'अग्नीषोमप्रणयन' (यज्ञ में अग्नि और सोम को आगे ले जाने की प्रक्रिया) में 'उप त्वाग्ने' इत्यादि तीन मन्त्रों (तृच) का अनुवाचन (पाठ) किया जाता है।
- **प्रमाण:** इसका स्पष्ट प्रमाण ऐतरेय ब्राह्मण (१.३०) में मिलता है— "उप त्वाग्ने दिवेदिव उप प्रियं पनिप्रतमिति तिस्रश्चैकां चान्वाह" (अर्थात् 'उप त्वाग्ने' आदि तीन मन्त्रों और एक अन्य मन्त्र का पाठ करे)।

१. आचार्य सायण का भाष्य (याज्ञिक एवं व्यावहारिक अर्थ)

अनुवाद: हे अग्ने! हम अनुष्ठाता (यज्ञ करने वाले) प्रतिदिन, रात और दिन (निरन्तर), अपनी सद्बुद्धि से आपको नमस्कार करते हुए आपके समीप आते हैं।

व्याख्या: सायण के अनुसार, यहाँ अग्नि भौतिक देवता हैं। यज्ञकर्ता प्रतिदिन सुबह-शाम पूर्ण श्रद्धा और बुद्धिपूर्वक अग्निहोत्र करते हुए अग्निदेव के निकट आते हैं और उन्हें नमस्कार रूपी हवि समर्पित करते हैं।

२. महर्षि दयानन्द सरस्वती का भाष्य (आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक दृष्टिकोण)

अनुवाद: हे सर्वोपास्य परमेश्वर (अग्ने)! हम उपासक जन प्रतिदिन विज्ञान के निरन्तर प्रकाश के लिए, दिन और रात अपनी उत्कृष्ट प्रज्ञा (बुद्धि) और शुभ कर्मों द्वारा नम्रता को धारण करते हुए (अहङ्कार त्याग कर) सब ओर से आपके समीप आते हैं (आपको प्राप्त करते हैं)।

वैज्ञानिक/आध्यात्मिक व्याख्या:

- महर्षि दयानन्द के अनुसार 'अग्नि' केवल भौतिक आग नहीं है, बल्कि 'अग्रणी' परमेश्वर का बोधक है।
- 'दिवेदिवे' का अर्थ यहाँ केवल दिन नहीं, बल्कि 'विज्ञान और ज्ञान का नित्य प्रकाश' है।
- 'दोषावस्तः' का तात्पर्य है जीवन के हर क्षण (अँधेरे और उजाले दोनों परिस्थितियों में) में प्रभु का स्मरण।
- 'धिया' का अर्थ है श्रेष्ठ प्रज्ञा और कर्म। मनुष्य अंधी श्रद्धा से नहीं, बल्कि विज्ञान-सम्मत बुद्धि और कर्मयोग के माध्यम से ईश्वरीय गुणों को धारण करता है।

व्याकरणिक सिद्धियाँ (Grammar Derivation - सायण भाष्य के अनुसार)

आचार्य सायण ने वैदिक संस्कृत के पदों की सूक्ष्म व्याकरणिक सिद्धि पाणिनी अष्टाध्यायी के सूत्रों से इस प्रकार की है:

उपः यह निपात है, अतः 'निपाता आद्युदात्ताः' (फि. सू. ८०) से इसमें निपात स्वर (आद्युदात्त) है।

त्वाः 'त्वामौ द्वितीयायाः' (पा. सू. ८.१.२३) सूत्र से युष्मद् शब्द (द्वितीया एकवचन) को 'त्वा' आदेश हुआ है और यह अनुदात्त है।

दोषावस्तः 'दोषा' का अर्थ रात्रि और 'वस्त्र' का अर्थ दिन है। यहाँ द्वन्द्व समास है। 'कार्तिकौजपादित्वात्' (पा. सू. ६.२.३७) सूत्र से यह पद आद्युदात्त (शुरुआत में उदात्त स्वर वाला) है।

धियाः यह 'धी' शब्द है। 'सावेकाचस्तृतीयादिर्विभक्तिः' (पा. सू. ६.१.१६८) सूत्र से एकाच् शब्द के आगे की तृतीया आदि विभक्ति उदात्त होती है।

नमः यह निपात है, अतः निपात स्वर लागू होता है।

भरन्तः 'भृ' धातु से शतृ प्रत्यय और शप् विकरण। 'कर्तरि शप्' (पा. सू. ३.१.६८) के पितृ होने के समान, शतृ प्रत्यय के लसार्वधातुक होने से 'तास्यनुदात्तेन्निदुपदेशाल्लसार्वधातुकमनुदात्त्वहिङ्ङरोः' (पा. सू. ६.१.१८६) सूत्र से अनुदात्त होता है और धातु-स्वर शेष रहता है।

इमसिः 'इण् गतौ' धातु से लट् लकार उत्तम पुरुष बहुवचन। 'इदन्तो मसिः' (पा. सू. ७.१.४६) सूत्र से 'मस्' को 'मसि' आदेश हुआ है। निघात स्वर से यह सिद्ध होता है।

निष्कर्ष

यह मन्त्र स्पष्ट करता है कि चाहे हम इसे कर्मकाण्ड के रूप में देखें (जहाँ नित्य अग्निहोत्र का विधान है) या आध्यात्मिक/वैज्ञानिक रूप में (जहाँ ज्ञान-विज्ञान और प्रज्ञा की प्राप्ति के लिए ईश्वर की नित्य उपासना का संदेश है), दोनों ही दृष्टियों में 'बुद्धि' (धिया) और 'नम्रता' (नमः) की प्रधानता स्वीकार की गई है।